नगर नियोजन एवं विकास

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

नगर नियोजन एवं विकास

डॉ. प्रदीप सिंह शेखावत

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल–9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com

नगर नियोजन एवं विकास

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-09-3

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित
झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE

आभार

नगर नियोजन एवं विकास नामक पुस्तक के लिए सर्वप्रथम मैं सिद्धि विनायक भगवान श्री गणेश एवं माँ शारदे के चरण कमलों में सादर नमन् करता हूँ जिनके आर्शीवाद के बिना यह कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

इस लेखन कार्य में मार्गदर्शन के लिए मैं डॉ. शीला रॉय, असोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

इस लेखन कार्य में सदैव परामर्श एवं तत्पर रह कर मदद करने के लिए न्यू पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन सोसायटी ऑफ इण्डिया के महासचिव, एवं कोशाध्यक्ष एवं सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के डॉ. जनकसिंह मीना का हृदय की अथक गहराईयों से आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरे पिताजी स्व. श्री हरनाथ सिंह शेखावत एवं माताजी श्रीमती किरण कँवर ने इस लेखन कार्य हेतु मेरे प्रेरणा स्रोत व सहायक बनकर सदैव मुझ पर अपने ममत्व व वात्सल्य से परिपूर्ण मेरा अविस्मरणीय सहयोग करते रहे हैं उन्हीं के वरद आशीर्वाद से यह कार्य सम्पन्न हुआ है।

डॉ. जयन्त सिंह जी एवं डॉ. खानू खान का मेरे प्रति उत्साहवर्धक, प्रेरक, अद्वितीय, त्यागमय सहयोग एवं अनुग्रह रहा है, जो जीवन पर्यन्त स्मरणीय रहेगा। मेरे भाई श्री ज्ञानसिंह शेखावत ने साहित्य उपलब्ध करवाकर, प्रेरणादायी आचरण द्वारा मुझे ऊर्जावान बनाये रखने

SAMPLE

में अविरल सहयेाग प्रदान किया है। अशोक कुमार शर्मा की सद्भावना व प्रेरक प्रोत्साहन भी मेरा सहयोगी रहा हैं तथा समय–समय पर लेखन कार्य की कठिनाईयों में मेरा मार्गदर्शन किया इसके अतिरिक्त मेरे सभी रिश्तेदारों एवं मित्रगणों की मंगलमय प्रेरणा तथा सहयेाग ने मेरा मार्गदर्शन करके इस कार्य को सरलता प्रदान की व मुझमें विश्वास का संचार करते रहे हैं।

डॉ. राजेश सिन्हा एवं डॉ. राकेश कुमार गोड़ीवाल का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर मुझे संदर्भ ग्रन्थ की उपलब्धता कराकर इस लेखन कार्य में अविरल सहयेाग प्रदान किया। इन सबके पावन मार्गनिर्देशन एवं सहयेाग के बिना यह लेखन कार्य पूर्ण होना असंभव ही नहीं अपितु चुनौतीपूर्ण था।

डॉ. प्रदीप सिंह शेखावत

नमूना • SAMPLE

भूमिका

आज वैश्विक स्तर पर दुनिया की लगभग आधी आबादी नगरीय क्षेत्रों में निवास कर रही है। लेकिन विश्व के नगरीय रुपान्नतण का प्रतिमान अलग–अलग राष्ट्रों में समरुपीय नहीं है। एक ओर जहाँ विकसित देश– अमेरिका, यूरोप की भाँति लैटिन अमरीका एवं कैरिबियन द्वीप समूह में लगभग तीन चौथाई आबादी नगरीय क्षेत्रों में रह रही है वहीं दूसरी ओर भारत, चीन, इंडोनेशिया एवं अफ्रीका में लगभग दो–तिहाई आबादी अभी ग्रामीण क्षेत्रों में ही रह रही है। अरब राष्ट्रों की लगभग आधी आबादी ग्रामीण एवं शेष आधी नगरीय आबादी का प्रतिमान अलग–अलग क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न है।

आधुनिक नगर नियोजन की शुरुआत औपनिवेशिक शहरों से हुई। इस प्रक्रिया में भूमि उपयोग और भवन निर्माण के नियमन के जरिए शहर के स्वरूप को परिभाषित किया गया। इसका एक मतलब यह था कि शहरों में लोगों के जीवन को सरकार ने नियंत्रित करना शुरू कर दिया था। इसके लिए एक योजना तैयार करना और पूरी शहरी परिधि का स्वरूप तैयार करना जरूरी था। यह प्रक्रिया अकसर इस सोच से प्रेरित होती थी कि शहर केसा दिखना चाहिए और उसे कैसे विकसित किया जाएगा। इस बात का भी ध्यान रखा जाता था कि विभिन्न स्थानों को कैसे व्यवस्थित करना चाहिए। इस दृष्टि से पिवकास की सोच और विचारधारा प्रतिबिम्बित होती थी और उसका क्रियान्वयन जमीन, उसके बाशिंदों और संसाधिनों पर नियंत्रण के जरिए किया जाता था। इसकी कई वजह थीं कि अंग्रेजों ने बंगाल में अपने

शासन के शुरू से ही नगर नियोजन का कार्यभार अपने हाथों में क्यों ले लिया था। एक वजह तो रक्षा उद्देश्यों से संबंधित थी।

1756 में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने कलकत्ता पर हमला किया और अंग्रेज व्यापारियों द्वारा माल गोदाम के तौर पर बनाए गए छोटे किले पर कब्जा कर लिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारी नवाब की संप्रभुता पर लगातार सवाल उठा रहे थे। वे न तो कस्टम ड्घ्यूटी चुकाना चाहते थे और न ही नवाब द्वारा तय की गई कारोबार की शर्तो पर काम करना चाहते थे। सिराजुद्दौला अपनी ताकत का लोहा मनवाना चाहता था। कुछ समय बाद, 1757 में प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की हार हुई। इसके बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक ऐसा नया किला बनाने का फैसला लिया जिस पर आसानी से हमला न किया जा सके।

उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दशकों तक शहर के विकास के लिए पैसे की व्यवस्था करना अभी भी केवल सरकार की नहीं बल्कि संवेदनशील नागरिकों की जिम्मेदारी ही माना जाता था। लॉटरी कमेटी ने शहर का एक नया नक्शा बनवाया जिससे कलकत्ता की एक मुकम्मल तसवीर सामने आ सके। कमेटी की प्रमुख गतिविधियों में शहर के हिंदुस्तानी आबादी वाले हिस्से में सड़क–निर्माण और नदी किनारे से अवैध् कब्जे हटाना शामिल था। शहर के भारतीय हिस्से को साफ–सुथरा बनाने की मुहिम में कमेटी ने बहुत सारी झोंपड़ियों को साफ कर दिया और मेहनतकश ग्रीबों को वहाँ से बाहर निकाल दिया। उन्हें कलकत्ता के बाहरी किनारे पर जगह दी गई।

अंग्रेजों ने शहरों में रेलवे स्टेशनों के डिजाइन और निर्माण में काफी निवेश किया था क्योंकि वे एक अखिल भारतीय रेलवे नेटवर्क के सफल निर्माण को अपनी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानते थे। मध्य बम्बई के आसमान पर इन्हीं इमारतों का दबदबा था और उनकी नव–गॉथिक शैली शहर को एक विशिष्ट चरित्र प्रदान करती थी। बीसवीं सदी की शुरुआत में एक नयी मिश्रित स्थापत्य शैली विकसित हुई जिसमें भारतीय और यूरोपीय, दोनों तरह की शैलियों के तत्व थे। इस शैली को इंडो–सारासेनिक शैली का नाम दिया गया था। इंडो शब्द हिन्दू का

संक्षिप्त रूप था जबकि सारासेन शब्द का यूरोप के लोग मुसलमानों को संबोधित करने के लिए इस्तेमाल करते थे। यहाँ की मध्यकालीन इमारतों – गुम्बदों, छतरियों, जालियों, मेहराबों – से यह शैली काफी प्रभावित थी। सार्वजनिक वास्तु शिल्प में भारतीय शैलियों का समावेश करके अंग्रेज यह साबित करना चाहते थे कि वे यहाँ के स्वाभाविक शासक हैं।

किसी भी नियोजित श्रेष्ठ नगर में अपेक्षित बुनियादी सुविधाओं की संख्या न्यूनतम 13 हैं : बिजली, सड़क, यातायात, पार्किंग, मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, संचार, रोजगार, आवास, बाजार और सुरक्षा। नियोजन को प्रभावित करने वाले बुनियादी तत्व चार हैं : कचरा, पानी, हरियाली और भूमि। आधुनिक नगर नियोजन के समक्ष पेश आ रही प्रमुख चुनौतियां पांच हैं: पानी, बिजली, भीड़, कचरा और पार्किंग। यदि आप श्रेष्ठ नियोजित नगरों की सूची उठाकर देखें तो पाएंगे कि इस सूची में वही शामिल हो पाएं हैं, जिन्होंने सर्वश्रेष्ठ नियोजन किया फिर चाहे वह नगर न्यूयार्क हो, चंडीगढ़ अथवा कोलकोता के नजदीक नवस्थापित बिधान नगर (साल्ट लेक सिटी)।

सन् 2011 तक भारत की नगरीय आबादी लगभग 410 मिलियन हो गई है जो कुल आबादी का एक तिहाई हिस्सा है। विगत पाँच दशकों में जहाँ भारत में आबादी की वृद्धि 2.5 गुणा रही है वहीं नगरीय आबादी में पाँच गुणा वृद्धि हुई है। अनुमान है कि 2045 तक भारत में नगरीय आबादी 800 मिलियन तक हो जायेगी। 1901 में भारत में छोटे बड़े 1827 नगरीय क्षेत्र थे जिनकी संख्या 2001 में 5061 हो गई है।

नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसका प्रादुर्भाव आर्थिक वृद्धि के परिणामस्वरूप होता है तथा यह आर्थिक संवृद्धि का निर्धारक भी है। इसके बावजूद भारत में आर्थिक वृद्धि की तुलना में नगरीकरण की वृद्धि दर धीमी रही है जिसके विविध कारक हैं: ग्रामीण उत्पादकता में अपर्याप्त वृद्धि, उद्योगों में मानव श्रम की बजाय मशीन एवं पूँजी आधारित प्रतिकूल प्रौद्योगिकी का विकास, श्रम विधानों की कठोर प्रकृति एवं लघु उद्योगों के विस्तार की अपर्याप्त नीति, नगरीय अधिसंरचना पर अपर्याप्त व्यय, नगरीय भूमि हदबंदी अधिनियम एवं नगरीय भूमि नीति की कठोरता,

इत्यादि। **नगर नियोजन एवं विकास** नामक पुस्तक निश्चित रुप से पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्दक साबित होगी।

डॉ. जनक सिंह मीना

नमूना • SAMPLE

अनुक्रमणिका

	आभार	*v*
	भूमिका	*vii*
1.	परिचय	1
2.	राष्ट्रीय शहरीकरण नीति	25
3.	स्थानीय अधिशासन	44
4.	नगर नियोजन एवं समावेशी विकास	67
5.	शहरी आपदाओं का विवेचन	86
6.	शहरीकरण एवं संचार क्रांति	108
7.	शहरों की प्रमुख समस्याएँ	122
8.	निष्कर्ष	144
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	*170*

नमूना SAMPLE